प्रातः क्लास 3/7/68 ओमशान्ति "बुद्धि का योग एक बाप के साथ हो"

ओमशान्ति। मीठे–2 रूहानी बच्चे जानते हैं कि बाप और दादा के आगे बैठे हैं। यह जानना तो बहुत ही सहज है। बाप–दादा के सम्मुख हम बैठे हैं। बाप द्वारा विश्व की दैवी बादशाही पाना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। जरूर जब कि सामने बैठे रहते हैं तो खुशी भी होती होगी; क्योंकि यहां शिवबाबा के पास तुम आये हो और कोई मनुष्य के पास नहीं आये हो। जानते हो शिवबाबा इस मनुष्य के तन में हैं। यहां बैठे जरूर अति इन्द्रिय सुख में बैठे होंगे। अगर बाप की याद में हो तो। हरेक अपने दिल से पूछे, हम बाप की याद में बैठे हैं? और हमको राजाई याद रहती है? और तो कोई ऐसा सतसंग होता नहीं जिसमें बच्चों को यह याद रहे। बाप और बादशाही। बाप के पास तुम बैठे हो तो बाप और वरसा जरूर याद पड़ेगा। वहां बाहर में रहते हो तो इतना याद नहीं रहेगा। भल वहां भाई–2 हो बैठते हो परन्तु यहां तो बाप के सामने भाई–2 हो बैठते हो। फर्क है। बाप के सामने जरूर बाप ही याद आवेगा और राजाई भी याद पड़ेगी। बाबा कहते हैं इस याद में बैठो। बाप की याद से बुद्धि में विश्व की बादशाही भी जरूर याद आती है। अगर याद रहती है तो जरूर अन्दर में बड़ी खुशी रहती होंगी। बहुत बड़ी ते बड़ी लाटी(लॉटरी) है कोई कम बात है क्या। दुनिया में तो बड़ा हंगामा होता रहता है। यहां तो कोई हंगामा नहीं। कोई गोरख–धंधा आदि नहीं। यहां बैठे हो बाप की याद में। वहां इतनी खुशी नहीं रहेगी जितना यहां। दूर से आते हैं जरूर खुशी होती होगी हम बाबा के पास बैठे हैं। बाप से स्वर्ग की बादशाही हमको कल्प–2 मिलती आई है। यहां तो सम्मुख बैठे हो ना। विश्व का मालिक बनाने वाले बाप के सामने बैठे हो। गायन भी है अति इन्द्रिय सुख गोप–गोपियों से पूछो; क्योंकि बेहद की राजाई देने वाले बेहद के बाप के सामने बैठे हो। तो जरूर राजाई याद होगी। यह भी जानते हो नई दुनिया स्वर्ग था। बाप ही नई दुनिया का रचयिता है। यह समझ कर जरूर बच्चों को बाप याद आता होगा और खुशी भी होती होगी। अज्ञान काल में भी कोई बाप के पास पैसे जास्ती, कोई बाप के पास कम होते हैं। जिसको जास्ती पैसे होंगे उनको जरूर जास्ती खुशी होंगी। यहां तो तुम बच्चे जानते हो हम तो विश्व के मालिक बनते हैं। बाप भी समझते हैं, तब समझ से ही पूछते हैं। आगे भी समझाया था। तब तो गायन है अति इन्द्रिय सुख गोप–गोपियों से पूछो अर्थात् बच्चों से पूछो। बाहर वालों की बात नहीं। गोप–गोपियां माना ही बच्चे। बच्चों से पूछते हैं जब मुझे अपने बाप को तुम इसमें देखते हो तो कितनी खुशी होती है। यहां बैठो आन्तरीक खुशी में बैठे हो। यहां से फिर बाहर में जाते हो तो फील करते हो बरोबर सम्मुख बैठने से बहुत खुशी होती है। बाहर जाने से खुशी जैसे कि बिगड़ जाती है; क्योंकि और तरफ़ बुद्धि का योग चला जाता है। यहां तो एक ही बाप के सामने बैठे हो। जरूर बाप की याद में होंगे तो खुशी होगी। अगर कहां बाहर वाले को याद करते होंगे, कोई को अपना गांव याद आवेगा, कोई को बाल–बच्चे याद आवेगा। अगर उन्हों की याद होगी तो वह खुशी हो न सके। यहां तो है ही एक बाप। नर्क से बुद्धि निकल जाती है। तुम्हारा बुद्धि चली जाती है स्वर्ग में। जैसे स्कूल के बच्चे को इम्तहान पूरा होता है तो समझते हैं हम जाकर फलाना क्लास में बैठेंगे। यहां तो तुम जानते हो हम बिल्कुल हाईएस्ट दर्जे में जाते हैं। स्वर्ग से ऊँच कोई चीज है नहीं। शान्तिधाम में तो शरीर के कर्मइन्द्रियां हैं नहीं। वह है शान्तिधाम। वहां चुप रहते हो। भक्ति मार्ग में बुद्धि कितनी भटकती है। बाप आकर भटकना से निकालते हैं। तो जब बाप की मुरली सुनते हैं तो कोई चौंक जाता है हमारी बुद्धि बाहर भटक रही थी। बुद्धि तो बाप तरफ़ लगानी चाहिए ना। अगर बाहर में होगा तो उनको सुख फील नहीं होगा। अभी यह तो हुई हरेक के दिल की बात। जो खुद ही समझ सकते हैं। ऐसे तो नहीं बाप आप अन्तर्यामी हो। आप बताओ हमारी बुद्धि कहां है। बाप कहते हैं मैं अन्तर्यामी हूं नहीं। यह तो हरेक खुद ही समझ सकते हैं। झूठ तो कोई का छिप नहीं सकता। ऐसे बहुत बच्चियां हैं जिनका बुद्धि योग बाहर कहां न कहां भटकता रहता है। बुद्धि को धक्का खाने की ढेर जगह है। याद करने की एक जगह है। आधा कल्प हमारी बुद्धि कहां न कहां भटकती रही है। यह भी समझते

हो अगर बाप को याद नहीं करते होंगे तो जरूर बुद्धि कहां न कहां भटकती होंगी। जैसे स्कूल में बच्चे बैठे रहते हैं कोई बहुत अटेन्शन से पढ़ते हैं। कम पढ़ने वालों की और तरफ़ बुद्धि भागती रहेगी। यहां भी ऐसे है। यहां बैठे बुद्धि लन्डन तरफ़, अफ्रिका तरफ़ होगी। ऐसे होता है। भक्ति मार्ग में भी कोई बैठ रामायण पढ़ते हैं तो सुनने वाले को देखते हैं यह तवाई हो बैठा है तो अचानक पूछते हैं। तो वह वायरे हो जाते हैं। सुना ही नहीं तो क्या सुनावेंगे। वह है भक्ति मार्ग यह है ज्ञान मार्ग। वह है अकल्याण मार्ग, यह है कल्याण मार्ग। यह तो बहुत सहज समझने का है। भारत जो गोल्डेन एज था वह अभी आयरन एज्ड में है। फिर बाप को याद करने से अभी गोल्डेन एज्ड में जाते हैं। यह भी जानते हो बाप हर 5000 वर्ष आते ही रहते हैं। कब भी मिस नहीं करते। एक/दो मिनट का भी फर्क नहीं पड़ सकता। तुमको पतित से पावन बनाने लिए बिल्कुल एक्युरेट टाइम पर आते हैं। एक सेकण्ड भी देरी नहीं। ड्रामा में फर्क नहीं पड़ सकता। सेकण्ड का भी। तो बाप समझाते रहते हैं मीठे–2 बच्चे स्वदर्शनचक्रधारी भव। तुम ब्राह्मणों को ही सिखाया जाता है कि 84 का चक्र कैसे फिरता है। यह देवताएं नहीं जानते। इस चक्र को भी जानने से तुम चक्रवर्ती राजा बन जाते हो। फिर वहां कुछ भी जानने की दरकार नहीं। वह है ही स्वर्ग धाम। अभी तुम बच्चे समझते हो ड्रामा के प्लैन अनुसार अभी हम अपने सुखधाम जा रहे हैं। बाप तो पूरा रास्ता बता रहे हैं। हम पुरुषार्थ कर रहे हैं और दैवी गुण भी धारण कर रहे हैं। यहां ही दैवीगुण धारण करनी है। साथ में बैज भी जरूर हो। तो याद रहेगा हम ऐसे बनते हैं। तुम ब्राह्मण ही कहेंगे ब्रह्मा द्वारा हमको यह वरसा मिलता है। यह बैज बहुत–2 वैल्युएबुल है। तुमको वैल्युएबुल बनाते हैं। भल पाई–पैसे की चीज़ है; परन्तु यह इस समय तुम्हारे बहुत–2 काम की चीज़ है। इनसे कोई को भी तीर लग सकता है। यह है तुम्हारे सारे ज्ञान का तन्त। बिल्कुल क्लीयर है। शिव बाबा ब्रह्मा द्वारा विष्णु पुरी का मालिक बनाते हैं। पहले शान्तिधाम–सुखधाम जावेंगे। त्रिमूर्ति बनाते हैं; परन्तु उसमें शिव का चित्र रखते ही नहीं; क्योंकि अर्थ ही नहीं समझते हैं। कहते भी हैं ब्रह्मा द्वारा स्थापना। विष्णु द्वारा पालना। अभी तुम अर्थ को समझते हो। बाप हमको ब्रह्मा द्वारा विष्णु पुरी का मालिक बनाते हैं। यह है अलफ। अलफ को ही अगर भूल जाये तो अलफ बिगड़(र) बाकी भाषा लिख न सके। ए बिगर भाषा लिख न सके। अलफ बिगर भाषा चल न सके। यह भी अलफ है मुख्य। यह तो जरूर समझाना पड़ता है। यह बाप है यह कोई गुरु–गोसाई आद नहीं है। बाबा इसमें प्रवेश करते हैं। तुम आत्मा को भी जानते हो। यही एक चीज़ है जो आंखों से नहीं देखी जाती। तुम आईना उठाकर आत्मा को, बाप को देख सकेंगे ? शरीर को तो सारा देख सकते हो; परन्तु आत्मा और बाप को नहीं देख सकते हो। जान सकते हो। आत्मा को भी जान सकते हैं। देखने वाली कौन है ? आंखे को देखने वाली कोई नाक है क्या। कहते हैं मैं फलाने को देखता हूं। यह मेरी आंख है। मेरा नाक है। मेरा–2 कौन कहता है। बाकी कौन है जो मेरा–2 करते हैं। बाकी है आत्मा। जिसको सिर्फ़ समझा जाता है। बरोबर आत्मा कहती है मेरा यह शरीर। फिर कहते हैं हमारे दो बाप हैं जिसको याद भी करते हैं ना हे परमात्मा, हे ईश्वर। यह भी ज्ञानमार्ग की बातें हैं समझने की। भक्ति मार्ग की बातें ही अलग हैं। वहां तो यह बातें होते ही नहीं। आत्मा को समझते नहीं तो आत्मा सो परमात्मा कह देते हैं। परमात्मा को फिर ठिक्कर–भित्तर में ठोक देते हैं। बिल्कुल ही जैसे 100% मेडचैप्स हैं। इतनी सहज बात भी समझ नहीं सकते हैं। मैं आत्मा इस शरीर का मालिक हूं। मैंने इस शरीर में प्रवेश किया है। आत्मा कहती है मैं भृकुटि के बीच में रहता हूं। आत्मा यहां निवास करती है। और कोई को भी यह पता नहीं है। यह भी ड्रामा में नूँध है। जब बाप आते हैं तो बाप ही आकर सभी बातें समझाते हैं। आत्मा थोड़े ही जानती है कि मुझ आत्मा में इतने जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। एक जन्म का पार्ट भी कोई जानते नहीं। वह तो कह देते घट–2 में वर्तते हैं। शरीर छोड़ते फिर कोई क्या बनते हैं कोई क्या बनते हैं। कितनी अनेकानेक मतें हैं। यह तो बच्चे समझते हैं ऊँच ते ऊँच भगवान है। उनके लिए ही गायन है तुमरी गत–मत तुम्हीं जानो। खुद तो

समझ न सके। अभी बाप द्वारा तुम समझते हो हमने इतने जन्म लिये हैं। बाप तुमको सभी जन्मों का हिसाब बैठ बताते हैं। तुम थोड़े ही जानते थे हम आत्मा कितने समय सुख में थे फिर क्या हुआ। कुछ समझते नहीं। तो गोया जनावर बुद्धि ठहरे ना। भैंस बुद्धि कहेंगे बिल्कुल ही मूर्ख तवाई देखने में आते हैं। अभी तुम तो मनुष्य हो, सभी कुछ जानने वाले हो। कहते हैं मनुष्य जीवन सबसे दुर्लभ है। इनमें ही मनुष्य जीवन मुक्ति पा सकती है। यह भी तुम समझते हो हमारे ही 84 जन्म हैं। हम कोन हैं यह भी कोई मनुष्य नहीं जानते। आत्मा को ही 84 जन्मों का पार्ट मिला हुआ है। तुम कहेंगे हम एक्टर्स हैं। इस विराट लीला में अनादि पार्ट मिला हुआ है। ऐसे नहीं कि भगवान ने पार्ट दिया है। नहीं। यह बना बनाया खेल है। इस खेल में पार्ट बजाते2 जब दुःखी हो जाते हैं तब ही स्वर्ग को याद करते हैं। कोई मरता है तो भी कहते हैं स्वर्ग पधारा। भारतवासी ऐसे कहेंगे। सन्यासी कहेंगे ज्योति ज्योत समाया या तो कहेंगे ब्रह्म में लीन हो गया। अनेकानेक मते हैं। बाप की तो है ही एक मत। जिसको ही सभी याद करते हैं। गाते भी हैं तुमरी गतमत तुम्हीं जानो। तुम ही बता सकते हो। तुम ही सद्गति देनेवाले हो और कोई सद्गति दे न सके। तुम्हारी मत से से सद्गति मिलती है। सद्गति मिल जाती फिर तुम देवता बन जाते हो। मनुष्यों को यह भी पता नहीं है कि भगवान आकर देवता बनाते हैं। भल शास्त्रों में सुना है मनुष्य से देवता..... परंतु समझते नहीं हैं। बाप जब खुद आकर सुनाते हैं तब ही तुम समझते हो। अभी तुम श्रीमत पर चलते हो। कोई भी आते हैं तो उनको पहले–2 यह बोलो, हम बाप के ऊँच ते ऊँच मत पर हैं। ऊँच ते ऊँच है भगवान। तो जरूर उनकी ऊँच ते ऊँच मत होगी ना। वह बाप कहते हैं और संग तोड़ मुझे एक संग जोड़ो। इसको ही प्राचीन योग कहा जाता है। भगवान ही सुनावेंगे। प्राचीन योग किसको कहा जाता है। इस योग से ही पैराडाइज बना है। नहीं तो कैसे बना, मनुष्य से देवता कैसे बनें। तुम जानते हो स्वर्ग कैसे बनता है। अलफ को जानने से तुम सभी कुछ जान जाते हो। बाबा ने बताया है मैं बेहद का बाप हूँ। बताओ मेरा वरसा क्या होगा? बेहद का मालिक बनना। गीत में भी है ना बाबा आप जो देते हो वह दुनियाँ में कोई भी दे न सके। आप ऊँच ते ऊँच हो तो जरूर ऊँच ते ऊँच नई दुनियाँ का ही वरसा देंगे। नई दुनियाँ में ऊँच ते ऊँच यह ल०ना० हैं। उसमें भी कृष्ण को ऊँच ते ऊँच कह सकते हैं। राधे को नहीं। राधे तो बाद में आती है। कृष्ण ऊँच ते ऊँच तो नारायण भी ऊँच ते ऊँच ठहरा। जन्म भी पहले उनका होता है। राधे का पीछे। सबसे जास्ती बाप से कौन बिछुड़ा। वह तो कृष्ण ही बिछुड़ा है पूरा 84 जन्म; इसलिए कृष्ण को ही श्याम–सुन्दर कहते हैं। राधे को श्याम–सुन्दर नहीं कहते हैं। फर्क तो पड़ता है। कृष्ण ही सबसे सुन्दर होता है; इसलिए कृष्ण की महिमा जास्ती है। झूले में भी सिर्फ़ कृष्ण को ही झुलाते हैं। जैसे बाप नम्बरवन वैसे नई दुनियाँ में भी कृष्ण नम्बरवन है। फिर है राधे। तो मीठे–2 बच्चों को यह भी सभी नालेज बुद्धि में रहनी चाहिए। यह नालेज बाप देते हैं। न कि मनुष्य। मनुष्य में बाप देते हैं। यह भी सुनते रहते हैं, तो तुम बच्चे जानते हो यहां बाबा बैठा है। बाप से नज़र मिलानी है। नज़र मिलाने से हम निहाल हो जाते हैं। तुम बच्चे ही यह सभी कुछ जानते हो। कोई तो सभी कुछ जान समझ कर भी फिर गिर पड़ते हैं। भगवान आर्डीनेन्स निकालते हैं तुमको पवित्र बनना है। जैसे करफी में ऑर्डर निकालते हैं ना कोई उसपर नहीं चलता है तो शूट कर देते हैं। बाप भी आर्डीनेन्स निकालते हैं। मुझे भूलकर तुम विकार में गये तो माया ने शु(शूट) कर किया। की कमाई चट हो जावेगी। भगवान का आर्डीनेन्स न माने, विकार में गये तो शूट। यह समझने की बातें हैं। बाप बार बार कहते हैं बच्चे काम को जीतने से तुम जगती जीत बनेंगे। मेरा बनकर फिर विकार में गिरे तो गुरु का निन्दक ठौर न पाये। डबल वरसा पा न सकेंगे। बहुत कड़ी चोट खा लेंग(लेंगे)। फिर उनकी जैसे टांग इस तरफ़, सिर उस तरफ़ हो जाता है। एकदम उल्टी बन जाते हैं। हठयोग आद करते हैं वह भी उल्टी लटकते हैं ना। वह है उल्टी रसम। माथा नीचे टांग ऊपर करते हैं। दिखलाते हैं टांग भगवान तरफ़ सिर नीचे है। टांग क्यों है; क्योंकि भगवान को ठिक्कर–भित्तर में समझ लेते हैं।

ऊपर फिर कौन रहता है। यह भी उल्टी प्रैक्टिस है ना। बहुत हठयोग की मेहनत करते हैं। बाप समझाते हैं अभी तुम्हारा बुद्धि योग बाप तरफ़ होना चाहिए। बाप कहते हैं मैं इस तन में आता हूँ। फिर चला भी जाता हूँ। आता हूं मदद करने लिए। ऐसे नहीं लोन लिया है तो कोई सारा समय बैठने लिए बांधा हुआ हूं। नहीं। जहां चाहे जा सकता हूं। थोड़ा समय आकर बैठते हैं। कहते हैं तुम मुझे याद करो तो मैं हूं ही। सेकण्ड में आ जा सकता हूं। देरी नहीं लगती। आत्मा सभी से बड़ा राकेट है। वह नहीं है तो यह बाबा नहीं समझा सकते हैं क्या। यह बिल्कुल बुद्धू तो नहीं है ना। तुम समझा सकते हो तो बाप भी तुम्हारे पास आ सकते हैं। तुम फील भी करते हो आज बाबा ने मुरली चलाई। हमारे में बोलने की तो ताकत न थी। बाप बच्चों का इस समय मददगार बनते हैं। सभी याद करते हैं तो क्या बाबा मदद नहीं करेंगे। बाप तो मालिक है ना। कहते हैं मैं बच्चों में भी आ सकता हूं। वह तो शूद्र सम्प्रदाय हैं उनमें जाकर क्या करेंगे। वहां तो ज्ञान की बात ही नहीं। बाकी बच्चों में क्यों नहीं आवेंगे। बच्चों की इज्जत, आब्रू सब रखते हैं। मैं आकर बच्चों की सेवा में उपस्थित होता हूं। बच्चों को कितना गुल–2 बनाते हैं। सारी दुनियाँ की सेवा करते हैं। सभी हिसाब–किताब चुक्तू कर मुक्तिधाम चले जाते हैं। वहां दुःख का नाम नहीं रहता। तो अभी स्वीट होम भी याद आते हैं। यहां तो बहुत किचड़ा है। यह सभी विनाश हो जाना है। दिन प्रति दिन तुम समझते जावेंगे। विनाश तो अभी आया कि आया। कितने मनुष्य, कितने धर्म हैं। सतयुग में एक ही धर्म होता है। तो जरूर चक्र फिरता होगा। फिर जरूर सतयुग आवेगा। यह भी किसकी बुद्धि में नहीं आता। तुम समझाते हो तो उसको कल्पना कह देते हैं। अंधे के औलाद अंधे हैं ना। रावण बिल्कुल अंधा बना देता है। यह है ही रावण सम्प्रदाय। अभी बाप कहते हैं मैं सभी को पावन बनाकर ले जाऊंगा। इसमें संशय की तो कोई बात ही नहीं। बहुत आकर सुनेंगे। तुम्हारा मंत्र बहुत ताकत वाला हो जावेगा। उसमें योग की ताकत भरी हुई होगी। तब बाप कहते हैं एक अक्षर भी तुम्हारा बहुत ही वैल्युएबुल है। पतित से पावन बन जावेंगे। गीता में भी यह अक्षर है मन्मनाभव। यह भी बातें भी समझेंगे वह जो इस धर्म के होंगे। आत्मा ही सभी कुछ करती है ना। बाबा के तरफ़ मेरी आंखें देखती हैं। मेरे को लेस हुआ है, तुम हो कौन ? मेरा2 करने वाला जरूर चैतन्य चीज़ है ना। अभी तुमको पता पड़ा है। मैं आत्मा हूं। आत्मा समझ बाप को याद करना है। कहां भी बैठे याद कर सकते हो। बाप तो बहुत ही सहज रास्ता बताते हैं। ऐसे नहीं कि एक जगह बैठ जाना है। टांगे थक जाती हैं वह तो वह तो हठयोग हो गया। हठ की बात नहीं। तुम कैसे भी बैठे याद कर सकते हो। नालेज सुनने लिए बैठना पड़ता है। सो भी हठ की बात नहीं। जिसमें दुःख फील हो वक(ह) काम न करो। बाप को याद करना तो सुख की बात है। रोमांच खड़ी हो जाती है। बाप से कुछ मिलता है तो य(ा)द करते हैं। भक्ति में भी बहुत याद करते हैं। परन्तु समझते नहीं हैं कि उसमें क्या मिलता है। अभी तुम समझते हो शिवबाबा आकर सभी का कल्याण करते हैं। दुनिया भी कायम है, तुम देवताएं भी कायम हो। यह चक्र फिरता रहता है। जितना–2 शिवबाबा को याद करेंगे, तुम ने इ(अ)न्जाम किया है आप आवेंगे तो हम एक आप को ही याद करेंगे। वारी जावेंगे। क्योंकि भक्ति में बहुत धक्के खाये हैं ना। धक्कों से बच जावेंगे। यहां तो तुम धक्का खाने से बच जाते हो। सिर्फ़ बाप को याद करना है। मेरे से तुमको वर्सा मिला है। तअ(ब) ही याद करते आये हो। अभी मैं आया हूं, तुमको विश्व का मालिक बनाता हूं। मैं नहीं बनता हूं। तुम देवताएं ही विश्व के मालिक बनते हो। मनुष्य विश्व का मालिक नहीं बन सकते हैं। कितनी अच्छी मीठी2 बातें हैं। मीठे बाप मीठी–2 बेहद की कहानी सुनाते हैं। कल्प–2 आकर कहानी सुनाते हैं। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। घूमो–फिरो कुछ भी करो। बाबा की याद में तुम कितना भी पैदल करो, कब थकावट फील न होगी। पता नहीं पड़ेगा कितना पैदल किया। अगर बाप की याद में होंगे तो। बाप की याद में देह को भूला जाता है। फिर आत्मा थकेगी नहीं। तुमको बैज परा(ड़ा) हुआ हो इससे बहुत सर्विस हो सकती है। बहुतों को समझा सकते हो। अच्छा बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।